वास्तव में वे संसदवाद के समर्थक थे। परिणामतया जिस पथ का उन्होंने अनुसरण किया, उसमें सहयोग का अर्थ था – असहयोग।'[7]

सन्दर्भ सूची :–

1. त्रिवेदी डॉ० रामनरेश –भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास, पृ० 41
2. भण्डारी एवं डॉ० विमलेश –भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास, पृ० 18
3. शर्मा प्रो० सी० पी० एवं शर्मा श्रीमती शशिप्रभा – भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, संवैधानिक विकास एवं भारतीय संविधान, पृ० 161
4. भण्डारी एवं डॉ० विमलेश – भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास, पृ० 169
5. भण्डारी एवं डॉ० विमलेश – भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास, पृ० 170
6. शर्मा प्रो० सी० पी० एवं शर्मा श्रीमती शशिप्रभा – भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, संवैधानिक विकास एवं भारतीय संविधान, पृ० 165
7. जकारिया – सिनेरेस्ट इण्डिया, पृ० 149

अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर दक्षिण–दक्षिण संवादः एक अध्ययन

डॉ0 आरती कुमारी *

प्रस्तुत शोध पत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकासशील राष्ट्रों के आर्थिक विकास हेतु स्थापित दक्षिण–दक्षिण संवाद पर आवश्यकतानुसार किये गए नये–नये संगठनों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी है जो गरीब राष्ट्रों के लिए संबल का काम कर रही है।

आज आर्थिक एवं रानीतिक क्षेत्रों में विश्व दो भागों में बँटा हुआ है– उत्तर और दक्षिण। उत्तर अमिर देशों का प्रतीक है जबकि दक्षिण निर्धन अर्थात विकासशील देशों का। दक्षिण–दक्षिण संवाद का अभिप्राय है विकासशील देशों के मध्य आर्थिक सहयोग के लिए विचार–विमर्श अथवा आपसी सहयोग के आधार की खोज। दक्षिण–दक्षिण सहयोग का शुरूआत 1964 में नयी दिल्ली में आयोजित द्वितीय अंकटाड के सम्मेलन में विकासशील राष्ट्रों में अपनी सहयोग की आवश्यकता पर बल देने के साथ हुआ था इसके बाद 1970 के लुसाका सम्मेलन में दक्षिण–दक्षिण सहयोग की अवधारणा पर विचार विमर्श हुआ। 1974 में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में जब "नयी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था" (NIEO) का अवाहन किया गया तो उसने विकासशील राष्ट्रों के आपसी सहयोग का विशेष उल्लेख किया गया था। इसके पश्चात 1975 में लिमा में हुए विदेश मंत्रियों के सम्मेलन में तथा 1976 के गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के सम्मेलन और 1976 के अकटाड सम्मेलन में भी दक्षिण–दक्षिण पर बल दिया गया था। मई 1981 में काराकास में विकासशील राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सहयोग पर हुई उच्च स्तरीय बैठक विकासशील देशों के आपसी सहयोग बढ़ाने के लिए प्रशुल्क अधिमानों की विश्वव्यापी प्रणाली की माँग की गयी, 22 से 24 फरवरी 1981 तक नयी दिल्ली में 44 राष्ट्रों का सम्मेलन अमीर देशों पर कम निर्भर रहने और दक्षिण–दक्षिण में परस्पर सहयोग स्थापित करने के लिए स्थापित किया गया था। अक्टुबर 1982 में "ग्रुप–77" के राष्ट्रों के मंत्रियों ने एक घोषणा द्वारा विकासशील राष्ट्रों के मध्य प्रशुल्क अधिमानों की स्थापना पर विचार विमर्श किया।[1]

*(व्याख्यता) राजनीति विज्ञान विभाग जी०एन०एम0 कॉलेज, परसथुआ (रोहतास)

गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के हरारे सिखर सम्मेलन 1986 मे "उत्तर–दक्षिण संवाद" के स्थान पर दक्षिण–दक्षिण संवाद की आवश्यकता अनुभव करते हुए राबर्ट मुगावे ने कहा कि "दक्षिण–दक्षिण सहयोग सामुहिक आत्मनिर्भरता अपनाएँ बिना अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधार लाना सम्भव नही है।" दक्षिण–दक्षिण सहयोग को गति देने के लिए उतरी कोरिया में विकासशील राष्ट्रों के वित मंत्रियों की बैठक आयोजित करना निश्चित किया गया जो 9 जून 1987 से उतरी कोरिया की राजधानी प्योंगयांग में प्रारम्भ हुई। विकासशील राष्ट्रों की आपसी सहयोग के लिए नई दिशा एवं गति देने और उनमें समन्वय स्थापित करने के लिए वर्ष 1987 में "दक्षिण आयोग का गठन किया गया"। दिसम्बर 1991 में आयोजित "G-15" के राष्ट्रों के काराकास सम्मेलन ने विकासशील राष्ट्रों के नेताओं में उनकी आपसी समस्याओं के प्रति जागरूकता पैदा की। प्रधानमंत्री पी0वी0 नरसिंमा राव ने उस सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था कि "निर्धन राष्ट्रों के आपसी सहयोग को चहुँमुखी विकास का प्रभावी माध्यम बनाया जाना चाहिए"।

दक्षिण–दक्षिण संवाद के विभिन्न मंच की चर्चा हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से करेंगेः–

संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन की स्थापना UNO के तत्वाध ाान में वर्ष 1964 में हुई जिसका मुख्य उद्देश्य है कि दक्षिण–दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देना ताकि दक्षिण की उतर पर निर्भरता कम हो सके। अंकटाड के निर्माण में ECLA के अध्यक्ष डा0 राउल प्रेविश ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। अंकटाड के प्रस्ताव शुभारात्मक है जिन्हे मानने के लिए राज्यों को वाध्य नही किया जा सकता है।[2]

विकासशील देशों के इस संगठन का मुख्य उघेश्य है उन देशों की स्वतंत्रता और उनके हितों की रक्षा करना शीत युद्ध काल (1945–1991) में इसने एक ओर विकासशील देशों की हितों की रक्षा की तो दुसरी ओर शीतयुद्ध की आक्रामकता को कम किया था। शीतयुद्ध के विघटन के बाद उभरी नयी एक ध ुवीय विश्व व्यवस्था में भी नैम विकासशील देशों की हितों की रक्षा करने वाला यह महत्वपूर्ण मंच बना हुआ है। आज भी नैम न्याय व समानता पर आधारित नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयासरत है। नैम 16वें शिखर सम्मेलन ईरान (तेहरान) 2012 तक इसके सदस्यों की संख्या 120 हो गयी।

"G-15" सम्मेलन का गठन 1989 में वेलग्रेड सम्मेलन के दौरान हुआ इसे विकासशील देशों के ठोस प्रतिनिधी के रूप में देखा जाता है। जिसका लक्ष्य विकासशील देशों क आपसी सहयोग को बढ़ाकर इनके विकास को गति प्रदान करना है।

आसियान 1967 में स्थापित दक्षिण–पूर्व एशिया के 10 देशों का संगठन है इसके अन्तर्गत दक्षिण–पूर्व एशिया के देश वैश्वीकरण के युग में अपने हितों की रक्षा के लिए आपसी सहयोग को बढ़ाकर आर्थिक विकास कर रहे हैं। वस्तुतः आसियान पूरे विश्व का एक ऐसा क्षेत्रीय संगठन है जो पुरे विश्व के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

सार्क दक्षिण एशिया सहयोग संगठन दक्षिण एशिया के आठ देशों (भारत, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीप, बंग्लादेश, अफगानिस्तान) का 1985 में स्थापित संगठन है जो दक्षिण एशिया के सामजिक आर्थिक विकास के लिए कार्य कर रहे है।[3]

हिन्दमहासागर तटीय क्षेत्रीय सहयोग संगठन मारीशस की पहल पर, 1997 में भारत तथा 13 अन्य देशों ने हिन्द महासागर के तटवर्ती देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से (IORAC–हिम्मतक्षेस) की स्थापना की गयी। इसके सदस्य देशों के बीच सामाजिक आर्थिक सहयोग कर इस क्षेत्र के निवाशियों के जीवन स्तर में सुधार करना है।

इबसा 2003 में गठित विश्व के तीन प्रमुख विकासशील देशों (भारत, ब्राजील, दक्षिण, अफ्रीका) का संगठन है। इसका मुख्य उद्येश्य तीना देशों के पारस्परिक हितों के विभिन्न राजनीतिक आर्थिक क्षेत्रीय वह वैश्वीक मुद्दों पर साझा दर्षष्टिकोण अपनाने व परस्पर सहयोग करने की दर्षष्टि से किया गया।

सिक्का एशियाई देशों मे पारस्परिक विश्वास संवर्द्धन हेतु 24 सदस्यी इस संगठन का निर्माण 1999 में हुआ था। जिसमें सामाजिक आर्थिक सहयोग बढ़ाने तथा आतंकवाद के उन्मुलन के लिए संयुक्त संघर्ष के लिए विश्वास संवर्द्धन उपायों की एक सूची 2010 के तीसरे शिखर सम्मेलन में सर्वसम्मति से स्वीकार की गयी।

एशियाई सहयोग संवाद की स्थापना 2001 में हुई जिसके 22 सदस्यों हैं इसके तीसरे शिखर सम्मेलन में एक समष्द्ध एशिया के निर्माण का संकल्प किया गया है तथा दुसरा उर्जा क्षेत्र में आत्म निर्भरता हेतु सहयोग करने पर बल दिया। इसमे भारत का प्रनिनिधित्व विदेश मंत्री नटवर सिंह ने किया।

विम्सटेक संगठन की स्थापना 1997 में हुई जिसके सदस्य बंगलादेश, भारत, म्यामार, श्रीलंका, तथा थाईलैण्ड है। फरवरी 2004 में इसमें नेपाल और भूटान भी सम्मलित हुए।

अफ्रिकी संघ 1963 में अफ्रिकी देशो में आपसी एकता व सहयोग बढ़ाने के लिए अफ्रिका एकता संगठन का गठन किया गया। निःसंदेह दक्षिण–दक्षिण सहयोग विकासशील देशों में एकता व सहयोग में वषद्धि हुई है। और इनकी विकास गति बढ़ी है परन्तु आज भी विकासशील देशों में एकता का अभाव है।[4]

वर्णित तथ्यों से स्पष्ट है कि अन्तराट्रीय रंग मंच पर अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के दोनों पहलु उतर–दक्षिण संवाद, दक्षिण–दक्षिण संवाद वास्तविक प्रगति नही कर पाये है फिर भी हम यहाँ यह कहना चाहेंगे कि न्याय व समानता पर आधारित नयी अर्न्तराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था न केवल विकासशील देशों के लिए लाभाकारी है अपितु विकासित देशों के लिए भी लाभकारी सिद्ध हुआ है।

संदर्भ–ग्रंथ सूचिः–

1. डा०एस0सी० सिंहलः समकालीन राजनीतिक मुद्दे–पृष्ठ–70
2. वही–पृष्ठ– 71
3. अरूणदत शर्माः राजनीतिक विज्ञान– पृष्ठ–803
4. वहीं–पृष्ठ– 804